



Nahr Ki Sadaaen (Gujarati)

# નહર કી સદાએ

- રોઝાદાર ડાકુ 7
- બન્દૂક કી એક ગોલી..... 13
- ઈયાદત કે 31 મ-દની ફૂલ 18

શૈબે તરીકત, અમીરે અહલે સુલ્તત, જાનિયે ઘ'વતે ઇસ્લામી, હાઝરત અલ્લામા મોલાના અબૂ ઝિલાલ

મુહમ્મદ ઇબ્રાહિમ અત્તાર કાદિરી ૨-ઝવી کاتبہ برکتہ  
العسائیہ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

# नहर की सदाओं<sup>1</sup>

शैतान लाभ सुस्ती दिलाये येह बयान (23 सइहात) मुकम्मल पठ  
 लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में म-दनी छिन्किलाब बरपा  
 डोता महसूस इरमाओंगे.

## मोतियों का ताज

अल कौलुल बदीअ में है : छिन्तिकाल के बा'द उजरते सय्यिहुना  
 अबुल अब्बास अहमद बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفُور को अहले शीराज  
 में से किसी ने ज्वाब में देभा के वोह सर पर मोतियों का ताज सजाये  
 जन्नती लिबास में मलबूस शीराज की जामेअ मस्जिद की मेहराब में  
 भरे हैं, ज्वाब देबने वाले ने अर्ज की : مَا فَعَلَ اللَّهُ بِكَ ؟ अल्लाह  
 الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ मैं आप के साथ क्या मुआ-मला इरमाया ? इरमाया :  
 कसरत से दुरुद शरीफ़ पढा करता था येही अमल काम आ गया के  
 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मेरी मज्फिरत इरमा दी और मुझे ताज पहना कर  
 दाभिले जन्नत इरमाया. (الْقَوْلُ الْبَيِّنُ ص २०६)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

1 : येह बयान अभीरे अहले सुन्नत सुन्नात الْعَالِيَةِ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمْ الْعَالِيَةِ का शारजा ता मदीनतुल औलिया  
 मुलतान (17 जुमादल उफ़्रा 1418 सि.हि./20-9-1997) को ब उरीअअे टेलीफ़ोन रिडे  
 हुवा था. तरमीम व छिन्किले के साथ तहरीरन छाजिरे बिदमत है.

मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

ફરમાને મુસ્તકા : عَسَى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर एक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह उस पर दस  
 रहमतें बेजता है. (प)

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! હઝરતે સચ્ચિદુના કા'બુલ અહ્બાર  
 رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ એક અઝીમ તાબેઈ બુઝુર્ગ થે, ઈસ્લામ આ-વરી સે કબ્લ  
 આપ યહૂદિયોં કે બહુત બડે આલિમ થે. આપ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ ફરમાતે હૈં  
 કે બની ઈસ્રાઈલ કા એક શખ્સ (તૌબા કરને કે બા'દ ફિર) એક ફાહિશા કે  
 સાથ કાલા મુંહ કર કે જબ ગુસ્લ કે લિયે એક નહર મેં દાખિલ હુવા તો  
 नहर की सदाओं आने लगीं : “तुझे शर्म नहीं आती ? क्या तूने तौबा  
 कर के येह अह्द नहीं किया था के अब कभी औसा नहीं करूंगा.” येह  
 सुन कर उस पर रिक्त तारी हो गई और वोह रोता थीभता येह  
 कहता हुवा भागा : “अब कभी भी अपने ध्यारे ध्यारे अल्लाह رَجْرَجْ  
 की ना फरमानी नहीं करूंगा.” वोह रोता हुवा एक पहाड पर पड़ोया  
 जहां बारह अफ़राह अल्लाह رَجْرَجْ की ઈબાદત મેં મશ્ગૂલ થે. યેહ ભી  
 ઉન મેં શામિલ હો ગયા. કુછ અર્સે કે બા'દ વહાં કહ્ત પડા તો નેક  
 બન્દોં કા વોહ કાફિલા ગિઝા કી તલાશ મેં શહર કી તરફ ચલ દિયા.  
 ઈત્તિફાક સે ઉન કા ગુઝર ઉસી નહર કી તરફ હુવા. વોહ શખ્સ ખૌફ સે  
 થર્રા ઉઠા ઔર કહને લગા : મેં ઈસ નહર કી તરફ નહીં જાઊંગા ક્યુંકે  
 વહાં મેરે ગુનાહોં કા જાનને વાલા મૌજૂદ હૈ, મુઝે ઉસ સે શર્મ આતી હૈ.  
 યેહ રુક ગયા ઔર બારહ અફરાહ નહર પર પહોંચે. તો नहर की सदाओं  
 आनी शुरूअ हो गई : औ नेक बन्दो ! तुम्हारा रकीक कहां है ? उन्हों ने  
 જવાબ દિયા : વોહ કહતા હૈ : ઈસ નહર પર મેરે ગુનાહોં કા જાનને  
 વાલા મૌજૂદ હૈ ઔર મુઝે ઉસ સે શર્મ આતી હૈ. નહર સે આવાઝ  
 આઈ : “سُبْحٰنَ اللَّهِ ! अगर तुम्हारा कोई अजीज तुम्हें ईजा दे बैठे  
 मगर फिर नाहिम हो कर तुम से मुआफ़ी मांग ले और अपनी गलत  
 आदत तर्क कर दे तो क्या तुम्हारी उस से सुलह नहीं हो जाती ? तुम्हारे

करमाने मुस्तकी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : श्री शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

रङ्गीक ने भी तौबा कर ली है और नेकियों में मशगूल हो गया है लिहाजा अब उस की अपने रब عَزَّ وَجَلَّ से सुल्ह हो चुकी है. उसे यहां ले आओ और तुम सब यहीं नहर के کنارे ँबादत करो.” उन्हों ने अपने रङ्गीक को षुश षबरी दी और फिर येह सब मिल कर वहां मशगूले ँबादत हो गये हत्ता की उस शप्स का वही ँन्तिकाल हो गया. ँस पर नहर की सदाओं गूँज उठी : “अै नेक बन्दो ! ँसे मेरे पानी से नहलाओ और मेरे ही کنارे दफनाओ ताके बरोजे क्रियामत भी वोह यहीं से उठाया जाये.” युनान्चे उन्हों ने अैसा ही क्रिया. रात को उस के मजार के करीब अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की ँबादत करते करते सो गये. सुभह उन सब का वहां से कूय करने का ँरादा था. जब जागे तो क्या देभते हैं के उस के मजार के अतराफ में 12 सर्व (या'नी अेक दरप्त जो सीधा और मण्डती (या'नी गाजर की) शकल का होता है) के षूब सूरत कदआवर दरप्त षडे हैं. येह लोग समज गये के अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने येह हमारे लिये ही पैदा करमाये हैं, ताके हम कहीं और जाने के बजाये ँन के साये में ही पडे रहें. युनान्चे वोह लोग वही ँबादत में मशगूल हो गये. जब उन में से किसी का ँन्तिकाल होता तो उसी शप्स के पहलू में दफन क्रिया जाता. हत्ता के सब वफात पा गये. बनी ँस्राईल उन के मजारात की जियारत के लिये आया करते थे. رَحْمَتُهُمُ اللهُ تَعَالَى أَجْمَعِينَ

(۹۰) كِتَابُ التَّوْبَاتِ ص ۹۰ अद्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मगिरत हो. اٰمِيْنَ بِجَاةِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पढ़ा तबकीक वोह बद भप्त हो गया. (उंन)

## अद्लाह एज़्ज़ु ज़े रहा है

**भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! आप ने मुला-हज़ा फ़रमाया !**

अद्लाह एज़्ज़ु ज़े कितना रहीम व करीम है. जब कोई बन्दा सच्चे दिल से तौबा कर लेता है तो उस से राज़ी हो जाता है. ईस छिकायत से येह भी दर्स मिला के गुनाह करने वाला अगर्ये लाभ पदों में छुप कर गुनाह करे अद्लाह एज़्ज़ु ज़े रहा है. नीज़ येह भी मा'लूम हुआ के बुलूगाने दीन के मज़ारात पर छाज़िरी का सिख़्स्विला पिछली उम्मत के मोमिनो में भी था.

## बार बार तौबा करते रहिये !

**भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो !** जब गुनाह सरजद हो जाअे तो ईन्सान को याहिये के अद्लाह एज़्ज़ु ज़े की बारगाह में तौबा कर ले, अगर ब तकाज़ाअे ब-शरियत फ़िर गुनाह कर बैठे तो फ़िर तौबा कर ले, फ़िर ખता हो जाअे तो फ़िर तौबा करे, अद्लाह एज़्ज़ु ज़े की रहमत से हरगिज़ हरगिज़ मायूस न हो, उस की रहमत बहुत बडी है, यकीनन गुनाहों को मुआफ़ करने में उस की रहमत का कोई नुकसान नहीं होता, बस હमें तौबा व ईस्तिग़्फ़ार का सिख़्स्विला जारी रखना याहिये. फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : **“يَا نَبِيَّ النَّاسِ إِنَّ الدُّنْيَا كَمَنْ لَا دَنْبَ لَهُ - يَا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ”** गुनाह से तौबा करने वाला अैसा है गोया उस ने गुनाह किया ही नहीं.” (इंन माजे ह ६१ व ६२) मा'लूम हुआ तौबा करने वाले के गुनाह मिटा दिये जाते हैं. बहर हाल હमें बारगाहे रब्बे जुल जलाल में हर दम रुका रहना याहिये और उस की रहमत से ना उम्मीद नहीं होना याहिये.

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جِس نے موز پر دس مرتبہ اور دس مرتبہ شام دُرُود پاك پدا  
 (उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्रात मिलेगी. (रु. 1/10))

## क्या सिर्फ़ नेक लोग ही जन्नत में जायेंगे ?

रहमत की बात आर्ध है तो येह अर्ज करता यलूँ के बा'ज लोग  
 जैसे ली लोते हैं जो नादानि में कल देते हैं : “जन्नत में सिर्फ़ नेकियों के  
 जरीअे ही दाखिला मिलेगा और जो गुनाह करेगा वोह लाजिमी तौर  
 पर जहन्नम में जायेगा, रहमत से बप्शे जाने की बात हमारी समज  
 में नहीं आती.” यकीनन येह शैतान के वस्वसे हैं. वरना मैं अपनी  
 तरफ़ से रब عَزَّوَجَلَّ की रहमत की बात कहां कर रहा हूँ, सुनो.....!  
 सुनो.....! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पारह 24 सू-रतुज्जुमर आयत 53 में  
 एशाद फ़रमाता है :

قُلْ لِيَعْبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ  
 أَنفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوا مِن رَّحْمَةِ  
 اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ يُغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا  
 إِنَّهُ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٥٧﴾

तर-ज-मअे कन्जुल एमान : तुम फ़रमाओ  
 अै मेरे वोह बन्दो जिन्हों ने (ना फ़रमानियों  
 के जरीअे) अपनी जानों पर ज़ियादती की  
 अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत से ना उम्मीद  
 न लो. बेशक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ सब गुनाह  
 बप्शे देता है बेशक वोही बप्शने वाला  
 मेहरबान है.

उदीसे कुदसी है, फ़ुदाअे रहमान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने रहमत  
 निशान है : يَا نِي مِري रहमत मेरे गजब पर सक्कत  
 रहती है. (मुसलम 1471/1 हदीथ 2701)

एमाम अहमद रज़ा ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के भाईजान उस्ताजे  
 जमन, शहन्शाहे सुभन हजरते मौलाना हसन रज़ा खान  
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن अपने ना'तिया दीवान “जौके ना'त” के अन्दर बारगाहे  
 फ़ुदाअे रहमान عَزَّوَجَلَّ में अर्ज करते हैं :

इरमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى غَيْرُ إِلَهٍ وَرَبِّهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की. (महारज़)

سَبَقْتُ رَحْمَتِي عَلَى غَضَبِي      तूने ज़ब से सुना दिया या रब  
 आसरा हम गुनाहगारों का      और मजबूत हो गया या रब

(जौके ना'त)

## आजिज बन्दे की हिकायत

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! यकीनन अल्लाह ज़ुंजुल की रहमत बहुत बहुत बहुत ही बड़ी है. वोह ब ज़ाहिर किसी छोटी सी अदा पर राज़ी हो जाये तो औसा नवाज़ता है के बन्दा सोय भी नहीं सकता. युनान्ये “किताबुतत्वाबीन” में है, हज़रते सय्यिदुना का'बुल अहूबार ऱिमाते हें : बनी इस्राईल के दो<sup>2</sup> आदमी मस्जिद की तरफ़ गये, अक तो मस्जिद में दाखिल हो गया मगर दूसरे पर पौड़े फुदा तारी हो गया और वोह बाहर ही बैठ गया और कलने लगा : “में गुनाहगार इस काबिल कहां जो अपना गन्दा वुजूह ले कर अल्लाह ज़ुंजुल के पाक घर में दाखिल हो सकूं.” अल्लाह ज़ुंजुल को उस की येह आजिजी पसन्द आ गई और उस का नाम सिद्दीकीन में दर्ज इरमा दिया. (كتاب التّوّابين ص 83) याद रहे ! “सिद्दीक” का द-रज़ा “वली” और “शहीद” से भी बडा होता है.

## नादिम बन्दे की हिकायत

इसी तरह की अक हिकायत किताबुतत्वाबीन सफ़हा 83 पर लिखी है : अक इस्राईली से गुनाह सरज़द हो गया, वोह बेहद नादिम हुवा और बे करार हो कर इधर से उधर भागने लगा के किसी तरह उस का गुनाह मुआफ़ हो जाये और परवर्द गार राज़ी हो जाये. अल्लाह ज़ुंजुल की बारगाहे रहमत में उस की बे करारी बरी

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جَلَى اللّٰه تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો મુઝ પર રોઝે જુમુઆ દુરુદ શરીફ પઢેગા મેં ક્રિયામત કે દિન ઉસ કી શકાઅત કરૂંગા. (ક્ર:અબ:)

નદામત કો શ-રફે કબૂલિયત હાસિલ હુઈ ઓર અલ્લાહ ﷻ ને ઉસ કો વિલાયત કે આ'લા તરીન રુત્બે સિદીક્રિયત સે નવાઝ દિયા.

## શરમિન્દગી તૌબા હૈ

સરકારે નામદાર صَلَّى اللّٰه تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા ફરમાને ખુશ ગવાર હૈ : (الْمُسْتَدْرَك ج ٥ ص ٣٤٦ حديث ٧٦٨٧). يا'ની શરમિન્દગી તૌબા હૈ. હકીકત યેહ હૈ કે બા'ઝ અવકાત ગુનાહોં પર નદામત વોહ કામ કર જાતી હૈ જો બડી સે બડી ઈબાદત ભી નહીં કર સકતી, ઈસ કા મતલબ હરગિઝ યેહ ભી નહીં કે ઈબાદત ન કી જાએ, યેહ સબ અલ્લાહ ﷻ કી મશિયત પર હૈ, કભી નદામત કામ કર જાતી હૈ તો કભી ઈબાદત. યુનાન્યે

## રોઝાદાર ડાકૂ

રૌઝુર્યાહીન મેં હૈ, હઝરતે સચ્ચિદુના શૈખ અબૂ બક શિબ્લી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰه الْوَالِي ફરમાતે હેં : મેં એક કાફિલે કે હમરાહ મુલ્કે શામ જા રહા થા, રાસ્તે મેં ડાકૂઓં કી જમાઅત ને હમેં લૂટ લિયા ઓર સારા માલ વ અસ્બાબ અપને સરદાર કે સામને ઢેર કર દિયા, સામાન મેં સે એક શકર ઓર બાદામ કી થેલી નિકલી, સારે ડાકૂઓં ને નિકાલ કર ખાના શુરૂઅ કર દિયા મગર ઉન કે સરદાર ને ઉસ મેં સે કુછ ન ખાયા, મેં ને પૂછા : સબ ખા રહે હેં મગર આપ ક્યૂં નહીં ખા રહે ? ઉસ ને કહા : મેં રોઝે સે હૂં. મેં ને હૈરત સે કહા : તુમ લૂટમાર ભી કરતે હો ઓર રોઝા ભી રખતે હો ! સરદાર બોલા : અલ્લાહ ﷻ સે સુલ્હ કે લિયે ભી તો કોઈ રાહ બાકી રખની યાહિયે. હઝરતે સચ્ચિદુના શૈખ શિબ્લી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰه الْوَالِي ફરમાતે હેં : કુછ અર્સે બા'દ મેં ને ઉસી ડાકૂઓં કે સરદાર કો એહરામ કી



﴿يٰٓرَبِّىُّ﴾ ईरमाने मुस्तफ़ा على الله تعالى غلبوا لله وسلم : मुज़ पर दुरेद पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है.

हालत में तवाफ़े भानओ का'बा में मशगूल देभा, उस के येहरे पर  
 र्थबादत का नूर था और मुज़-हदात ने उसे कमज़ोर कर दिया था, मैं ने  
 तअज्जुब के साथ पूछा : क्या तुम वोही शप्स नहीं हो ? वोह बोला :  
 “ओ हां मैं वोही हूं और सुनिये ! उसी रोज़े ने अद्लाह جَزَّوَجَزَّ के साथ  
 मेरी सुल्ह करवा दी है.”

(رَوْضُ الرِّيَاحِينَ ص ٢٩٣)

## हर पीर शरीफ़ को रोज़ा रभिये

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! मा'लूम हुवा के किसी नेकी को छोटी  
 समझ कर तर्क नहीं कर देना चाहिये, क्या पता वोही छोटी नज़र आने  
 वाली नेकी अद्लाह جَزَّوَجَزَّ की भारगाह में मकबूल हो जाओ और हमारे  
 दोनों जहां संवर जाओं. इस खिकायत से नफ़ली रोज़े की अहम्मियत  
 भी मा'लूम हुई. बेशक हर ओक कसरत के साथ नफ़ली रोज़े रभने की  
 ताकत नहीं पाता, ताहम कम अज़ कम हर पीर शरीफ़ का रोज़ा तो रभ  
 ही लेना चाहिये के सुन्नत है नीज़ नेक बनाने के अज़ीम नुस्खे म-दनी  
 र्थन्आमात में से 58वां म-दनी र्थन्आम भी. عَزَّوَجَزَّ दा'वते  
 ईस्लामी से वाबस्ता कसीर र्थस्लामी भाई और र्थस्लामी बहनें इस  
 “म-दनी र्थन्आम” के मुताबिक पीर शरीफ़ का रोज़ा रभने की सुन्नत  
 अदा करते हैं और आशिकाने रसूल के हर दिल अज़ीज़ 100 ई सदी  
 र्थस्लामी येनल म-दनी येनल पर हर पीर शरीफ़ को बराहे रास्त (या'नी  
 LIVE) “मुनाजते र्थफ़तार” का सिखिसिवा होता और आशिकाने रसूल  
 के र्थफ़तार करने का इह परवर मन्ज़र दिभाया जाता है. आप भी ब  
 निख्यते सवाब “म-दनी येनल” देभते रहिये और दूसरों को भी देभने  
 की दा'वत दे कर ખૂબ सवाब का अज़ीम ખज़ाना लूटिये.

करमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليّ و آله وسلّم : तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पछोयता है. (बरान)

## आतश परस्त घराने का कबूले ईस्लाम

आईये ! लगे हाथों “म-दनी येनल” की अेक म-दनी बहार सुनते हैं : बम्बई (हिन्द) के जहांगीर नामी अेक भूबड़ नौ जवान इल्मी अदाकार के बयान का लुब्बे लुबाब है : हमारा सारा घर आग की पूजा किया करता था, जैसे में म-दनी येनल हमारे लिये गोया पैगामे नजात बन कर आया ! किस्सा यूँ है के मेरी अम्मी बडे शौक से म-दनी येनल देखा करती थी, अेक बार में ने सोया के आबिर अम्मीजान ईतनी दिलयस्पी के साथ “सब्ज ईमामे वाले मौलानाओं” की बातों को क्यूँ सुना करती है, लाओ में भी तो देभूँ के येह “मौलाना लोग” क्या बोलते हैं ! युनान्ये में ने भी T.V. पर “म-दनी येनल” लगाया : म-दनी मुजा-करे का सिखिसला था, मुजे बहुत अस्था लगा, में गौर से सुनता रहा, म-दनी मुजा-करे की बातें तासीर का तीर बन कर मेरे जिगर में पैवस्त होती रहीं, मेरे दिल की दुन्या जेरो जबर होने लगी और मेरा जमीर पुकार पुकार कर कलने लगा : जहांगीर ! तू गलत राह पर भटक रहा है, अगर नजात याहता है तो सब्ज ईमामे वालों का सख्या दीन या’नी मज़हबे ईस्लाम कबूल कर ले, مُحَمَّدٌ ﷺ में ने दा’वते ईस्लामी की वेब साईट [www.dawateislami.net](http://www.dawateislami.net) पर राबिता किया और मुसल्मान हो गया. में ने दा’वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-भतुल मदीना से भी राबिता किया, उन्हों ने मेरी भूब रहनुमाई इरमाई, उन के हुस्ने अप्लाक ने मुजे बेहद मु-तअस्सिर किया और अद्लाह ﷻ की रहमत से अब हमारा सारा घर ईस्लाम के दामन में आ युका है. में रात के तीन तीन बजे तक म-दनी येनल पर

﴿رمانے مۇستەكى﴾ صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : ﴿س نے مۇز پر دس مررتبا دۇرۇدە پاك پەدا اءللاھ عزوجل اوس پر سى رەماتە نازلل فرماتا ھە.﴾ (طراى)

آنے والا “م-ءنى مۇئا-كرا” دےپتا رھا ھۇ، اوس مەن اوك بار داڊى رپنے كى ترغىب سۇن كر مەن نے داڊى بى بڊانى شۇرۇء كر دى ھە اور بامبئ كە دا’وتە ەسلاامى वाले आशिकाने रसूल की सोहबत में रह कर ەسلاامى न-ऊरिय्यात व नमाऊ वगैरा ەबादात की बى ता’लीम ھاसिल कर रھا ھۇ.

म-ءنى येनल लाअगा सुन्नत की धर धर में बहार  
 कर दे मौला दो जहां में नाज़िरी का बोडा पार  
 صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

भीठे भीठे ەसलाामी भाँधयो ! बात बहूत दूर निकल गँध, असे रोजे की ब-र-कत और अء्लाह عزوجل की रहमत का तऊक़िरा ھो रھا था, سُبْحَانَ اللهِ ! डाकूओं के सरदार को रोजे ने कहां से कहां पछोंया दिया ! रोजे की ब-र-कत से उसे छिदायत बى मिली और ەबादतो रियाऊत की सआदत बى मिली.

### अशिश का बडाना

कीभियाअे सआदत में ुअरते शैष कितानी قُدَس سُرَةُ التُّورَانِي فرमाते ھुँ : मँ ने ुअरते सय्यिदुना जुनेद बगदादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي को भा’दें वक़ात प्वाब में देष कर पूछा : يَا مَعْ فَعَلَ اللهُ بِكَ ؟ اء्लाह عزوجل ने आप के साथ क्या मुआ-मला फरमाया ? फरमाने लगे : मेरी ەबादतें और रियाऊतें तो काम न आँध, अलबत्ता रात को उठ कर ज़ो दो रक़्मत तहज्जुद पढ लिया करता था उसी के सबब मग्दिरत ्हो गँध.

(किसीائے سعادت ج ۲ ص ۱۰۰۷)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جس کے پاس میرا ٹیکہ ہو اور وہ صبح و شام پر دُڑد شریک نہ پڑے تو وہ لوگوں میں سے کجھूस तरीन شائس ہے۔ (زینت)

رَحْمَتِ حَقِّ "بِهَا" نَهْ مِىْ حَقِيْدِ

رَحْمَتِ حَقِّ "بِهَانَهْ" مِىْ حَقِيْدِ

(યા'ની અલ્લાહ ﷻ કી રહમત "બહા" યા'ની કીમત નહીં માંગતી બલ્કે ઉસ કી રહમત તો "બહાના" ઢૂંડતી હૈ)

મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! ફરાઈઝ કી અદાએગી કે સાથ સાથ નવાફિલ કી ભી આદત ડાલની ઓર ખુસૂસન તહજજુદ તો હરગિઝ નહીં છોડની ચાહિયે, કયા મા'લૂમ તહજજુદ મેં ઉઠને કી મશક્કત બારગાહે ઇલાહી ﷻ મેં કબૂલિયત પા જાએ ઓર હમારી મફિરત કા બહાના બન જાએ.

### બા'ઝ મુસલ્માન ઝરૂર જહન્નમ મેં જાએંગે

બબરદાર ! ઈસ રહમત ભરે બયાન કા મતલબ કહીં કોઈ યેહ ન સમજે કે ચૂંકે અલ્લાહ ﷻ કી રહમત બહુત બડી હૈ લિહાઝા અબ નમાઝેં છોડ દો..... ર-મઝાન કે રોઝે ભી મત રખો..... T.V. ઓર ઇન્ટરનેટ કે રૂ બરૂ બૈઠો ઓર ખૂબ ફિલ્મેં ડિરામે દેખો..... ખૂબ બદ નિગાહી કરો..... અલ્લાહ ﷻ કી રહમત બહુત બડી હૈ અબ માં બાપ કો સતાના શુરૂઅ કર દો..... ખૂબ ગાલિયાં બકો..... કસરત સે ઝૂટ બોલો..... મુસલ્માનોં કી ખૂબ ગીબતેં કરો..... મુસલ્માનોં કે દિલ દુખાઓ..... બદ અપ્લાકી કે સાબિકા સારે રેકોર્ડ તોડ દો અલ્લાહ ﷻ કી રહમત બહુત બડી હૈ. દાઢી મુંડવા દો યા ખશખશી દાઢી રખો..... ચોરી કરો..... ડાકા ડાલો..... ઝુલ્મો સિતમ કી આંધિયાં ચલા દો..... ખૂબ શરાબ પિયો..... જૂઆ ખેલો બલ્કે જૂઆ ઓર મુનશિયાત કા અઙા હી ખોલ ડાલો ! જો જો ગુનાહ અભી તક નહીં કર પાએ ﷻ વોહ ભી કર ડાલો કયૂંકે અલ્લાહ ﷻ કી

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा ठिक्क हो और वोह मुज पर दुइटे पाक न पढे. (एम)

रहमत बहुत बडी है. भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! अल्लाह ﷻ आप पर अपना ખૂબ ફઝલો કરમ ફરમાએ और आप को बे हिसाब बप्शे, आमीन. ईस तरह शैतान कान पकड कर आप को अपनी ઈતાअत में न लगा दे. याद रहिये ! जहां अल्लाह ﷻ रहीम व करीम है वहां जब्बार व कहुदार भी है, जहां वोह नुक्ता नवाज है वहां बे नियाज भी है. अगर उस ने किसी छोटे से गुनाह पर गिरिफ्त फरमा ली तो कहीं के न रहेंगे. ખબરદાર ! ખબરદાર ! ખબરદાર ! येह तै है के कुछ न कुछ मुसल्मान अपने गुनाहों के सबब दाखिले जहन्नम भी होंगे. હમેં અલ્લાહ ﷻ કી ખુફયા તદબીર સે હર વક્ત લરઝાં વ તરસાં રહના યાહિયે કહીં એસા ન હો કે ઉન જહન્નમ મેં જાને વાલોં કી ફેહરિસ મેં હમારા નામ ભી શામિલ હો.

### ફારૂકે આ'ઝમ કી મ-દની સોચ

ઈમામુલ આદિલીન, અમીરુલ મુઅમિનીન હઝરતે સય્યિદુના ઉમર ફારૂકે આ'ઝમ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ કી મ-દની સોચ પર કુરબાન જાઈયે કે ઉમ્મીદ હો તો એસી और ખૌફ ભી હો તો એસા ! યુનાન્ચે આપ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હેં : अगर अल्लाह ﷻ सब બન્દોં મેં સે સિર્ફ એક કો દાખિલે જહન્નમ ફરમાને વાલા હો તો મેં ખૌફ કરૂંગા કે કહીં એસા ન હો કે જહન્નમ મેં દાખિલ હોને વાલા વોહ એક બન્દા મેં હી હૂં और अगर अल्लाह ﷻ सिवाએ એક કે સબ કો જહન્નમ મેં દાખિલ ફરમાને વાલા હો તો મેં ઉમ્મીદ કરૂંગા કે જહન્નમ સે મહફૂઝ રહને વાલા વોહ એક બન્દા મેં હી હૂં. (حلیة الاولیاء ج ۱ ص ۱۸۹) બહર હાલ અલ્લાહ ﷻ કી રહમત સે માયૂસ ભી નહીં હોના યાહિયે और उस के कहरो गज़ब से बे ખૌફ ભી નહીં રહના યાહિયે.

करमाने मुस्तफ़ी: حَسْبِيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيهِ وَالسَّلَامُ: जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क़ुरआन)

## बन्दूक की अेक गोली.....

मैं आप को अपनी बात अक्ली दलील से समझाने की कोशिश करता हूँ, म-सलन ँस वक्त ँस ँजतिमाअ में दस हजार ँस्लामी भाँ भौजूद हों और कोँ दहशत गर्द करीबी मकान की छत पर पिस्तोल ले कर भडा हो जाँ और अे'लान करे मैं सिर्फ़ अेक गोली यलाता हूँ अगर लगेगी तो सिर्फ़ अेक ही को लगेगी बाकियों को कुछ नहीं कहुँगा. क्या जयाल है ? सिर्फ़ अेक ही को तो गोली लगनी है ! क्या बाकिया नव हजार नव सो निनानवे ँस्लामी भाँ भे भौफ़ हो जाँगे ? हरगिळ नहीं बढे हर अेक ँस भौफ़ से भाग भडा होगा के कहीं किसी अेक को लगने वाली "वोह गोली" मुजे ही न आ लगे ! उम्मीद है मेरी बात समझ में आ गँ होगी.

## आग की जूतियां

जब येह तै शुदा अन्न है के कुछ न कुछ मुसल्मान गुनाहों के सबभ जहन्नम में दाभिल किये जाँगे तो आभिर हर मुसल्मान ँस बात से क्यूँ नहीं डरता के कहीं मुजे भी जहन्नम में न डाल दिया जाँ. पुदा عَزَّوَجَلَّ की कसम ! बन्दूक की गोली की तकलीफ़ जहन्नम के अजाब के सामने कुछ भी नहीं. **मुस्लिम शरीफ़** में है : "जहन्नम का सब से डलका अजाब येह है के मुअज़्जब (या'नी अजाब पाने वाले) को **आग की जूतियां** पहनाँ जाँगी जिस की गरमी और तपिश से उस का दिभाग पतीली की तरह भौलता होगा, वोह येह समजेगा के सब से जियादा अजाब मुजी पर है." ( ۲۱۲ حدیث ۱۳۴ مسلم ) **भुभारी शरीफ़** में है के अल्लाह عَزَّوَجَلَّ भरोजे क्रियामत सब से कम अजाब वाले दोज़भी से इरमाअेगा : "जो कुछ (माल व दौलत वगैरा) जमीन में है अगर वोह तेरी भिडक होता तो क्या तू अजाब से छुटकारा पाने के लिये येह फ़िदये में दे देता ?" तो वोह कहेगा : "ज़रूर." ( ۲۶۱ حدیث ۶۰۰۷ ) या'नी सभी कुछ दे डालूंगा के कहीं येह

करमाने मुस्तक। على الله تعالى غلبوا لله وسلم : मुज़ पर दुःख शरीक़ पढो अल्लाह. تومر पर रहमत भेजगा. (अनवर)

आग की जूलियां मेरे पाँउ से निकलती हों ! अस किसी तरह भी इस अज़ाब से मुझे छूटकारा मिल जाये.

**क्या सब से उलका अज़ाब बरदाशत हो जायेगा ?**

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! सोचो ! बार बार सोचो ! अगर किसी छोटे से गुनाह के सबब येही सब से छोटा और उलका अज़ाब किसी पर मुसल्लत कर दिया गया तो उस का क्या बनेगा ? म-सलन किसी को गाली दी जालां के येह कबीरा गुनाह है फिर भी अगर इस ज़ुर्म की पादाश में सब से उलका अज़ाब ही हो गया तो क्या होगा ? मां बाप को सताने के ज़ुर्म में, के येह भी कबीरा गुनाह है मगर इस ज़ुर्म पर भी अगर सब से उलका अज़ाब ही हो जाये तो इस की बरदाशत किस में है ? इसी तरह रोज़ मर्दा किये जाने वाले गुनाहों पर गौर करते यले जाईये. जूट बोलने के सबब, किसी की गीबत करने के सबब, युगुल ખોरी के सबब, हराम रोज़ी कमाने के सबब, नशा करने के सबब, झिंमैं और डिरामे देपने के सबब, गाने बाजे सुनने के सबब, बल्के T.V. पर सिर्फ़ औरत से खबरें सुनने के सबब अगर सब से उलका अज़ाब हो गया तो क्या होगा ? वोह औरत भी कितनी बढ नसीब है जो यन्ट सिक्कों की ખातिर T.V. पर आ कर खबरें सुनाती है. काश ! उस को येह अहसास हो जाता के मेरे ज़रीअे लाખों मर्द बढ निगाही का गुनाह कर के, अपनी आंखों को हराम से पुर कर के अपनी आंखों में जहन्नम की आग भरने का सामान कर रहे हैं और इस सबब से मैं खुद भी बहुत ज़ियादा गुनहगार हुई जा रही हूं ! बहर जाल जो इस तरह अपने दिल को बहलाता है के मैं ने तो सिर्फ़ खबरों के लिये T.V. रखा है, वोह जान खोल कर सुन ले के मर्द का अजन्बिय्या औरत को देपना या औरत का अजन्बी मर्द को ब शख्त देपना हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है, तो अगर T.V. पर सिर्फ़ खबरें देपने, सुनने के

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : मुज पर कसरत से दुइदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुइदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मङ्गिरत है. (म. १७)

સબબ હી જહન્નમ કા હલકા અઝાબ મુસલ્લત કર દિયા ગયા ઔર આગ કી જૂતિયાં પહના દી ગઈ તો ક્યા બનેગા ? અપને અન્દર ઈસ્લાહ કા જઝબા બેદાર કરને કે લિયે અપના ઝેહૂન બનાઈયે કે અગર બિગૈર શર-ઈ ઉઝૂર કે મૈં ને નમાઝ કી જમાઅત તર્ક કર દી ઔર સબ સે હલકા અઝાબ દે દિયા ગયા તો મેરા ક્યા હોગા ! અગર બે પર્દગી કર લી, અપની ભાભી સે બે તકલ્લુફી કી યા ઉસ કો કસ્દન દેખા, ઈસી તરહ યચી, તાઈ, મુમાની, સાલી, ખાલાઝાદ, મામૂઝાદ, ફૂફીઝાદ, ચયાઝાદ યા તાયાઝાદ સે પર્દા ન ક્રિયા ઉન કે સામને બિલા તકલ્લુફ આતે જાતે રહે, ઉન કો દેખતે રહે, ઉન સે હંસ હંસ કર બાતેં કરતે રહે ઔર ઈન જરાઈમ મેં સે કિસી એક ગુનાહ કી હદ તક પહોંચને વાલે જુર્મ કી પાદાશ મેં અગર પાઉ મેં આગ કી જૂતિયાં ડાલ દી ગઈ તો ક્યા બનેગા ? જી હાં ! ભાભી, યચી, તાઈ, મુમાની, વગૈરા વગૈરા જિન કા તઝકિરા હુવા યેહ સબ અજનબિય્યા ઔર ગૈર મહૂરમા ઔરતેં હેં ઈન સે ઔર હર ઉસ ઔરત સે શરીઅત ને પર્દે કા હુકમ દિયા હૈ જિન સે શાદી હો સકતી હૈ. ઈસી તરહ ઔરત ભી તમામ ગૈર મહારિમ રિશ્તેદારોં સે પર્દા કરે.

### જહન્નમ કે ખૌફનાક અઝાબ કી ઝલ્કિયાં

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! અપને આપ કો કમ અઝ કમ છોટે ઔર હલકે અઝાબ સે હી ડરા દીજિયે હાલાં કે જહન્નમ મેં એક સે એક ખૌફનાક અઝાબ હેં. યુનાન્યે દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કી મતબૂઆ કિતાબ “બયાનાતે અત્તારિય્યા” જિલ્દ 2 સફહા 293 તા 297 પર હે : વોહ બન્દા ભી કિતના અજબ હૈ જો યેહ જાનતા હૈ કે દોઝખ સપ્ત તરીન અઝાબ કા મકામ હૈ ફિર ભી ગુનાહોં કા ઈરતિકાબ કરતા હૈ. મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! અગર જહન્નમ કો સૂઈ કે નાકે કે બરાબર ખોલ દિયા જાએ તો તમામ ઝમીન વાલે ઉસ કી ગરમી સે હલાક હો જાએ. અહલે જહન્નમ કો જો મશરૂબ પીને કે



करमाने मुस्तफ़ा. صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जो मुज़ पर अक दुइद शरीफ़ पढता है अल्लाह उंस के लिये अक कीरात अज्र लिखता है और कीरात उहुद पडाउ जितना है. (मुराज़)

लिये दिया जायेगा वोह इस कदर भतरनाक है के अगर उस का अक डोल दुन्या में भडा दिया जाये तो दुन्या की तमाम भेतियां बरबाद हो जायें न अनाज उगे न इल. जहन्नम के सांप और बिच्छू भेद भौंफ़नाक हैं. उदीस शरीफ़ में है : “जहन्नम में अ-जमी उीतों की गरदन की मिसल बडे बडे सांप होंगे जो दोज़भियों को उसते होंगे वोह जैसे जहरीले होंगे के अगर अक मर्तबा काट लेंगे तो यालीस साल तक उन के जहर की तकलीफ़ नहीं जायेगी और लगाम लगाये हुअे भय्यरों के बराबर बडे बडे बिच्छू जहन्नमियों को उंक मारते रहेंगे के अक बार उंक मारने की तकलीफ़ यालीस साल तक बाकी रहेगी.”

(17729 حديث 216 ص 6 مسند امام احمد ج 1) तिरमिज़ी की रिवायत में है : “जहन्नम में “सुइद” नामी आग का अक पडाउ है जिस की बुलन्दी सत्तर बरस की राह है. काफ़िर जहन्नमियों को उस पर बढाया जायेगा. सत्तर बरस में वोह उस की बुलन्दी पर पड़ोयेंगे फिर उीपर से उन्हे गिराया जायेगा तो सत्तर बरस में वोह नीचे पड़ोयेंगे इसी तरह उन को अजाभ दिया जाता रहेगा.” (ترمذى ج 4 ص 260 حديث 2080) जहन्नम के ऐसे ऐसे भौंफ़नाक अजाभ का तज़किरा सुनने के बा वुजूद भी जो गुनाहों से बाज़ न आये उस पर वाकैत अज्जुभ है. आपिर ईन्सान को इस दुन्या ने क्या दे देना है जो इस की रंगीनियों में गुम और इस की लूटमार में मसड़फ़ है.

### जहन्नम की भतरनाक गिजायें

लजीज़ गिजायें मजे ले ले कर खाने वालों को जहन्नम की भयानक गिजाओं को नहीं भूलना चाहिये ! तिरमिज़ी की रिवायत में है : दोज़भियों पर भूक मुसल्लत की जायेगी तो येह भूक उन सारे अजाभों के बराबर हो जायेगी जिन में वोह मुभ्तला हैं वोह इरियाद करेंगे तो उन्हे जरीअ (जहरीली कांटेदार घास) में से दिया जायेगा, जो न मोटा करे न भूक से नजात दे. फिर वोह खाना मांगेंगे तो उन्हे

करमाने मुस्तका صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने किताब में मुज पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिस्कार करते रहेंगे. (उं. ५)

इन्दा लगने वाला पाना दिया जायेगा तो उन्हें याद आयेगा के वोह दुन्या में इन्दा (लगे निवाले) को पानी से निगलते थे युनान्हे वोह पानी मांगेंगे तो उन को लोहे के जम्बूर (सन्सी) से षौलता हुवा पानी दिया जायेगा जब वोह उन के मुंह के करीब होगा तो उन के मुंह लून देगा फिर जब उन के पेट में दाखिल होगा तो उन के पेटों की हर चीज काट डालेगा. (२०१० हदीथ २६३ व ६४) अक और हदीसे पाक में है : “अकूम (या'नी थुहड जो के दोजबियों को पिलाया जायेगा) का अक कतरा अगर दुन्या पर टपक पड़े तो दुन्या वालों के पाने पीने की तमाम चीजों को (तल्प व बढबूदार बना कर) भराव कर दे.” (अबि सजाह हदीथ ३२० व ०३) आह ! जहन्नम में ऐसा डोलनाक अजाव डोने के बा वुजूह आपिर ईन्सान गुनाहों पर इतना दिलेर क्यूं है ?

### न मायूस हों न बे षौइ

भीठे भीठे ईस्लामी लार्थयो ! षौइके षुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से लरज उठिये ! और अपने गुनाहों से तौबा कर लीजिये ! हमें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रहमत से मायूस ली नही होना चाहिये और उस के कहरो गजब से बे षौइ ली नही रहना चाहिये, दोनों ही सूरतों में तबाही है, जो कोई रहमते षुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से मायूस हो गया वोह ली हलाक हुवा और जो गुनाहों पर दिलेर हो गया और पकड में आ गया तो वोह ली भरबाह हुवा. बहर डाल गैरत व मुरव्वत का तकाजा ली येही है के जिस परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ ने महुज अपने इजलो करम से हमें बे शुमार ने'मतें अता इरमाई हैं उस की इताअत व इरमां भरदारी की जाये और उस के मडबूब, दानाअे गुयूब صلى الله تعالى عليه وآله وسلم के दामने करम से हर दम वाबस्ता रहते हुअे उन की सुन्नतों को अपनाया जाये के इसी में हमारे लिये दुन्या व आपिरत की ललाई है.

कब गुनाहों से कनारा में कर्इगा या रब ! नेक कब अै मेरे अल्लाह ! बनूंगा या रब !

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर एक बार दुर्रुह पाक पढा अल्लाह उस पर दस रहमतें भेजता है. (स्लम)

कब गुनाहों के मरज से मैं शिफ़ा पाऊँगा ! कब मैं भीमार मदीने का बनूँगा या रब !

अइव कर और सदा के लिये राजी हो जा

गर करम कर दे तो जन्नत में रहूँगा या रब !

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! बयान को ईप्तिताम की तरफ़ लाते हुअे सुन्नत की इज़ीलत और यन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूँ. ताजदारे रिसालत, शह-शाहे नुबुव्वत, मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्मे बजमे खिदायत, नोशअे बजमे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मडब्बत की उस ने मुज से मडब्बत की और जिस ने मुज से मडब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगी. (ابن عساکر ج ۹ ص ۳۴۳)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आका

जन्नत में पडोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلٰى مُحَمَّد

“घयादत करना रसूले मोहतरम की सुन्नते मुबा-रफ़ा है”  
के ईकतीस दुर्रुह की निस्बत से ईयादत के 31 म-दनी इल

عُودُوا الْمَرِيضَ ﴿1﴾ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ 8 इराभीने मुस्तफ़ा

या'नी मरीज की ईयादत करो (الادب المفرد ص ۱۳۷ حدیث ۵۱۸) ﴿2﴾ जो शप्स किसी मरीज की ईयादत के लिये जाता है तो अल्लाह उस पर पछतर हजार (75,000) इरिशतों का साया करता है और उस के हर कदम उठाने पर उस के लिये अक नेकी लिखता है और हर कदम रबने पर उस का अक गुनाह मिटाता है और अक द-रजा बुलन्द इरमाता है यहां तक के वोह अपनी जगह पर बैठ जाअे, जब वोह बैठ जाता है तो रहमत उसे ढांप लेती है और अपने घर वापस आने तक रहमत उसे ढांपे रहेगी (مُعْجَمُ اَوْسَطِ ج ۳ ص ۲۲۲ حدیث ۴۳۹۶)

﴿3﴾ जो शप्स किसी मरीज की ईयादत को जाता है तो आस्मान से अक मुनादी

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज़ पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (جران)

निदा करता है : तुझे बिशारत (या'नी भुश भबरी) डो तेरा यलना अय्था है और तूने जन्त की ऐक मन्जिल को अपना ठिकाना बना लिया (ابن ماجه २८ ص १२ احديث १६६३)

4 ﴿ जो मुसल्मान किसी मुसल्मान की र्थ्यादत के लिये सुभल को जाये तो शाम तक उस के लिये सत्तर हज़ार फिरिशते र्थस्तिग्फ़ार (या'नी बग्शिश की हुआ) करते हैं और शाम को जाये तो सुभल तक सत्तर हज़ार फिरिशते र्थस्तिग्फ़ार करते हैं और उस के लिये जन्त में ऐक बाग डोगा

5 ﴿ जिस ने अय्थे तरीके से जुजू किया फिर अपने मुसल्मान भाई की सवाब की नियत से र्थ्यादत की तो उसे जहन्म से 70 साल के इंसिले तक दूर कर दिया जायेगा (ابوداؤد ३ ص ६८ احديث ३०११)

6 ﴿ जब तू मरीज़ के पास जाये तो उस से कल के तेरे लिये हुआ करे के उस की हुआ फिरिशतों की हुआ की मानिन्द है (ابن ماجه २८ ص ११ احديث १६६१)

7 ﴿ मरीज़ जब तक तन्दुरुस्त न हो जाये उस की कोई हुआ रद नहीं छोती (۱۹ احديث ۱۶۶)

8 ﴿ जब कोई मुसल्मान किसी मुसल्मान की र्थ्यादत को जाये तो 7 बार येह हुआ पढे : (1) اَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ اَنْ يَشْفِيَكَ۔ (1) अगर मौत नहीं आई है तो उसे शिफ़ा डो जायेगी (۲۰۱ احديث ۳۱۰۶)

✿ मरीज़ की र्थ्यादत करना सुन्नत है अगर मा'लूम है के र्थ्यादत के लिये जाने से उस बीमार पर गिरां (या'नी ना गवार) गुज़रेगा, ऐसी हालत में र्थ्यादत के लिये मत जाये (बहारे शरीअत, जि. 3, स. 505)

✿ अगर मरीज़ से आप के दिल में रन्जिश या तबीअत को उस से मुना-सबत नहीं फिर भी र्थ्यादत कीजिये ✿ र्थत्तिबाअे सुन्नत की नियत से र्थ्यादत कीजिये अगर महुज़ र्थस लिये बीमार पुर्सी की के जब मैं बीमार पडूं तो वोह भी मेरी तीमार दारी के लिये आये तो सवाब नहीं मिलेगा ✿ किसी की र्थ्यादत के लिये जायें और मरज़ की सप्तती देयें तो उस को उराने वाली बातें न करें म-सलन तुम्हारी हालत

1. तरजमा : मैं अ-जमत वाले, अर्शे अजीम के मालिक अल्लाह جَلَّ جَلَّتْ سے तेरे लिये शिफ़ा का सुवाल करता हूं.

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पड़ा तबकीक वोह बढ भपत हो गया. (उर्ज)

ખરાબ હૈં ઓર ન હી ઈસ અન્દાઝ પર સર હિલાઅેં જિસ સે હાલત કા ખરાબ હોના સમઝા જાતા હૈં ❀ ઈયાદત કે મૌકઅ પર મરીઝ યા દુખી શખ્સ કે સામને અપને ચેહરે પર રન્જો ગમ કી કૈફિયત નુમાયાં કીજિયે ❀ બાતચીત કા અન્દાઝ હરગિઝ ઐસા ન હો કે મરીઝ યા ઉસ કે અઝીઝ કો વસ્વસા આએ કે યેહ હમારી પરેશાની પર ખુશ હો રહા હૈં !

❀ મરીઝ કે ઘર વાલોં સે ભી ઈઝહારે હમદદી કીજિયે ઓર જો ખિદમત યા તઆવુન કર સકતે હોં કીજિયે ❀ મરીઝ કે પાસ જા કર ઉસ કી તબીઅત પૂછિયે ઓર ઉસ કે લિયે સિહ્હત વ આફિયત કી દુઆ કીજિયે ❀ નબિય્યે રહમત, શફીએ ઉમ્મત صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم કી આદતે કરીમા યેહ થી કે જબ કિસી મરીઝ કી ઈયાદત કો તશરીફ લે

જાતે તો યેહ ફરમાતે : (بخاري ج ۲ ص ۵۰۰ حديث ۳۱۱۶) (1) لَا بَأْسَ طَهُورًا إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى (1) ❀ મરીઝ સે અપને લિયે દુઆ કરવાઈયે કે મરીઝ કી દુઆ રદ નહીં હોતી ❀ ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : મરીઝ કી પૂરી ઈયાદત યેહ હૈં કે ઉસ કી પેશાની પર હાથ રખ કર પૂછે કે મિઝાજ કેસા હૈં ?

(ترمذی ج ۴ ص ۳۳۴ حديث ۳۷۴) ❀ મુફરિસરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફતી અહમદ યાર ખાન ખાન عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللہِ تَعَالٰی ઈસ હદીસે પાક કે તહ્ત ફરમાતે હૈં : યા'ની જબ કોઈ શખ્સ કિસી બીમાર કી મિઝાજ પુર્સી કરને જાવે તો અપના હાથ ઉસ કી પેશાની પર રખે ફિર ઝબાન સે યેહ (યા'ની આપ કી તબીઅત કેસી હૈં) કહે, ઈસ સે બીમાર કો તસલ્લી હોતી હૈં, મગર બહુત દેર તક હાથ ન રખે રહે, યેહ હાથ રખના ઈઝહારે મહબ્બત કે લિયે હૈં (મિરઆત, જિ. 6, સ. 358 બિ તસરુફિન) ❀ મરીઝ કે સામને ઐસી

બાતેં કરની યાહિઅેં જો ઉસ કે દિલ કો ભલી મા'લૂમ હોં, બીમારી કે ફઝાઈલ ઓર અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ કી રહમત કે તઝકિરે કીજિયે તાકે ઉસ કા ઝેહન સવાબે આખિરત કી તરફ માઈલ હો ઓર વોહ શિકવા વ શિકાયત

1. તરજમા : કોઈ હરજ કી બાત નહીં અલ્લાહ તઆલા ને યાહા તો યેહ મરઝ (શુનાહોં સે) પાક કરને વાલા હૈં.

❀ મરીઝ કે સામને ઐસી બાતેં કરની યાહિઅેં જો ઉસ કે દિલ કો ભલી મા'લૂમ હોં, બીમારી કે ફઝાઈલ ઓર અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ કી રહમત કે તઝકિરે કીજિયે તાકે ઉસ કા ઝેહન સવાબે આખિરત કી તરફ માઈલ હો ઓર વોહ શિકવા વ શિકાયત

❀ મરીઝ કે સામને ઐસી બાતેં કરની યાહિઅેં જો ઉસ કે દિલ કો ભલી મા'લૂમ હોં, બીમારી કે ફઝાઈલ ઓર અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ કી રહમત કે તઝકિરે કીજિયે તાકે ઉસ કા ઝેહન સવાબે આખિરત કી તરફ માઈલ હો ઓર વોહ શિકવા વ શિકાયત

करमाने मुस्तफ़ा : على الله تعالى غلبوا الواسم : जिस ने मुझ पर एक बार दुर्रदे पाक पढा अदवाह उस पर दस रडभतें बेजता है. (1)

के अदफ़ाज ज़बान पर न लाये ❀ धयादत करते हुअे मौकअ की मुना-सभत से मरीज को नेकी की द्वा'वत भी पेश कीजिये, ખુसूसन नमाज की पाबन्दी का जेहून दीजिये के बीमारियों में कई नमाजी भी नमाजों से गाफ़िल हो जाते हैं ❀ मरीज को म-दनी येनल देખने की रगभत दिलाईये और उस की ब-र-कतों से आगाह कीजिये ❀ मरीज को म-दनी काफ़िलों में सफ़र की और ખुद सफ़र के काबिल न हो तो अपनी तरफ़ से घर के किसी इर्द को सफ़र करवाने की तरगीब फ़रमाईये. और म-दनी काफ़िलों की वोह म-दनी બહારें सुनाईये जिन में द्वाआओं की ब-र-कतों से मरीज को शिक्षाएं मिली हैं ❀ मरीज के पास जियादा देर तक न बैठिये और न शोरो गुल कीजिये હાં अगर भीमार ખુद હી देर तक બિઠાએ રખને का ખ्वाहिश मन्द हो तो मुम्किना सूरत में आप उस के जज्बात का अहतिराम कीजिये ❀ બા'જ लोगों की आदत होती है के मरीज या उस के नुमायन्दे से मिलते हैं तो कुछ न कुछ धलाज बताते हैं और બા'જ तो मरीज से धसरार करते हैं के मैं ज़े धलाज बता रहा हूं वोह कर लो, ફુલાं दवा ले लो, ઠીક હો જાઓગે ! મરીજ को याहिये के “जिस तिस” (या'नी हर किसी) का बताया हुवा धलाज न करे, के “नीम हकीम ખतरએ જાન”, किसी का बताया हुवा धलाज करने से पहले अपने तबीब से मशवरा कर ले। ખબરદાર ! જો તબીબ ન હોને કે બા વુજૂદ ઈલાજ બતાતે રહતે હેં વોહ ઈસ સે બાજ રહેં ❀ મરીજ કી ઈયાદત કે મૌકઅ પર તોહફે લાના ઉમ્દા કામ હૈ મગર ન લાને કી સૂરત મેં ઈયાદત હી ન કરના और દિલ મેં યેહ ખયાલ કરના કે अगर कुछ न ले कर ज़अेगा तो वोह क्या सोयेंगे के ખाली હાથ ઈયાદત કે લिये આ ગએ. ખાલી હાથ ભી ઈયાદત કર હી લેની યાહिये ન કરના સવાબ સે મહરૂમી का બાઈસ है ❀ આપ ઈયાદત કે લिये જાતે હુઅે अगर ફલ और બિસ્કિટ વગેરા તહાઈફ લે જાને લગેં તો મશવરા હૈ કે

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : જો શપ્સ મુઝ પર દુરૂદ પાક પઢના ભૂલ ગયા વોહ જન્નત કા રાસ્તા ભૂલ ગયા. (جران)

મક-ત-બતુલ મદીના કે મત્બૂઆ કુછ મ-દની રસાઈલ ભી લે જા કર મરીઝ કો પેશ કીજિયે તાકે વોહ મુલાકાતિયોં, (और अगर अस्पताल में हो तो) पड़ोसी मरीजों और उन के अजीजों को तोड़फूटन दे सकें बल्के जड़े नसीब ! मरीज ખુદ ભી કુછ મ-દની રસાઈલ હદિથ્યતન મંગવા કર ઈસ ગરઝ સે અપને પાસ રખ કર સવાબ કમાએ ❁ ફાસિક કી ઈયાદત ભી જાઈઝ હૈ, ક્યૂંકે ઈયાદત હુકૂકે ઈસ્લામ સે હૈ ઓર ફાસિક ભી મુસ્લિમ હૈ (બહારે શરીઅત, જિ. ૩, સ. 505) ❁ મુરતદ ઓર કાફિરે હરબી કી ઈયાદત જાઈઝ નહીં (ફી ઝમાના દુન્યા મેં સારે કાફિર હરબી હૈં) ❁ બદ મઝહબ (ગૈરે મુરતદ) કી ઈયાદત કરના મન્ઝ હૈ.

હઝારોં સુન્નતેં સીખને કે લિયે મક-ત-બતુલ મદીના કી મત્બૂઆ દો કુતુબ (1) 312 સફહાત પર મુશ્તમિલ કિતાબ “બહારે શરીઅત” હિસ્સા 16 ઓર (2) 120 સફહાત કી કિતાબ “સુન્નતેં ઓર આદાબ” હદિથ્યતન હાસિલ કીજિયે ઓર પઢિયે. સુન્નતોં કી તરબિય્યત કા એક બેહતરીન ઝરીઆ દા’વતે ઈસ્લામી કે મ-દની કાફિલોં મેં આશિકાને રસૂલ કે સાથ સુન્નતોં ભરા સફર ભી હૈ.

લૂટને રહમતેં કાફિલે મેં ચલો      સીખને સુન્નતેં કાફિલે મેં ચલો  
હોંગી હલ મુશ્કિલેં કાફિલે મેં ચલો      ખત્મ હોં શામતેં કાફિલે મેં ચલો

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**ચેહ રિસાલા પઢ કર દૂસરે કો દે દીજિયે**

શાદી ગમી કી તકરીબાત, ઈજતિમાઆત, આ’રાસ ઓર જુલૂસે મીલાદ વગૈરા મેં મક-ત-બતુલ મદીના કે શાએઅ કદર્દા રસાઈલ ઓર મ-દની ફૂલોં પર મુશ્તમિલ પેમ્ફલેટ તકસીમ કર કે સવાબ કમાઈયે, ગાહકોં કો બ નિય્યતે સવાબ તોહફે મેં દેને કે લિયે અપની દુકાનોં પર ભી રસાઈલ રખને કા મા’મૂલ બનાઈયે, અખ્બાર ફરોશોં યા બચ્ચોં કે ઝરીએ અપને મહલ્લે કે ઘર ઘર મેં માહાના કમ અઝ કમ એક અદદ સુન્નતોં ભરા રિસાલા યા મ-દની ફૂલોં કા પેમ્ફલેટ પહોંચા કર નેકી કી દા’વત કી ધૂમેં મચાઈયે ઓર ખૂબ સવાબ કમાઈયે.

તાલિબે ગમે મદીના વ  
બકીઅ વ મફિરત વ  
બે હિસાબ જન્નતુલ  
ફિરદોસ મેં આકા  
કા પડોસ



14 શવ્વાલુલ મુકર્રમ 1433 હિ.

2-9-2012

کے زمانے میں حضرت ابراہیم علیہ السلام نے کہا: جس کے پاس میرا لڑکا ہے اور اس نے مجھ پر دُرُودِ پاک نہ پڑھا تو اس کی کوئی بھلائی نہیں ہوگی۔ (سورۃ بقرہ: 129)

### کھیریں

سوال	نمبر	سوال	نمبر
موتیوں کا تاج	1	بہشت کا بھلائی	10
اللہ تعالیٰ کے لئے دعا ہے	4	اللہ تعالیٰ نے جہنم میں جہنمیوں کو	11
بار بار توبہ کرتے رہیے !	4	پڑھنے اور اللہ کی تعریف کرنے سے	12
کیا سب سے بڑا جہنم میں جہنمیوں کو	5	پڑھنے کی ایک جگہ.....	13
اللہ تعالیٰ کے لئے دعا ہے	6	اللہ تعالیٰ کی تعریف	13
اللہ تعالیٰ کے لئے دعا ہے	6	اللہ تعالیٰ سے اللہ تعالیٰ نے جہنمیوں کو	14
اللہ تعالیٰ کے لئے دعا ہے	7	اللہ تعالیٰ کے لئے دعا ہے	16
اللہ تعالیٰ کے لئے دعا ہے	7	اللہ تعالیٰ کے لئے دعا ہے	17
اللہ تعالیٰ کے لئے دعا ہے	8	اللہ تعالیٰ کے لئے دعا ہے	18
اللہ تعالیٰ کے لئے دعا ہے	9	اللہ تعالیٰ کے لئے دعا ہے	19

### مآخذ و مراجع

مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب
دارالکتب العلمیہ بیروت	حلیۃ الاولیاء	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	قرآن پاک
دارالکتب العلمیہ بیروت	الترغیب والترہیب	دارالکتب العلمیہ بیروت	بخاری
دارالفکر بیروت	ابن عساکر	دار ابن حزم بیروت	مسلم
انتشارات گنجینہ تہران	کیسے سعادت	دار احیاء التراث العربی بیروت	ابوداؤد
مؤسسۃ الریان بیروت	القول البدیع	دارالفکر بیروت	ترمذی
دارالکتب العلمیہ بیروت	کتاب التواضع	دار المعرفہ بیروت	ابن ماجہ
دارالکتب العلمیہ بیروت	روض الراحین	طشکنت ازبکستان	الادب المفرد
ضیاء القرآن مرکز الاولیاء لاہور	مرآة	دارالفکر بیروت	مسند امام احمد
رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور	فتاویٰ رضویہ	دارالکتب العلمیہ بیروت	مجموعہ اوسط
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دار المعرفہ بیروت	مستدرک



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### किताब पढने की दुआ

अज : शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, भानिये दा'वते ईस्लामी, हजरत अल्लामा  
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईल्यस अतार कादिरि र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ  
दीनी किताब या ईस्लामी सबक पढने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ  
लीजिये اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاذْكُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ओ अल्लाह! हम पर ईल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर  
अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ओ अ-ज़मत और बुखुर्गी वाले ! (المستطرف ج ١ ص ٤٠٤ دار الفكر بيروت)  
नोट : अव्वल आभिर अेक अेक बार दुरुद शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना

व बकीअ

व मग़िदरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



### नह्र की सदाओं

येह रिसाला (नह्र की सदाओं)

शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, भानिये दा'वते ईस्लामी हजरत  
अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईल्यस अतार कादिरि र-जवी जियाई  
دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी) ने ईस रिसाले को गुजराती रस्मुल  
पत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाओअ करवाया  
है. ईस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाओं तो मजलिसे तराजिम को  
(ब जरीअअे मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेकटेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाजा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 • E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

## सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ  
 ईस्लामी के मक़दे मक़दे म-दनी माहल में ज़ कसरत सुन्नतों सीमा और सिपाई ज़ती हैं, हर जुमा'रात ईशा की नमाज़ के बाद आप के शहर में होने वाले द्वा'वते ईस्लामी के हक़तावार सुन्नतों पर ईजतिमाअ में रिज़ाअे ईवाही के लिये अच्छी अच्छी निव्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी ईजतिमा है. आशिकाने रसूल के म-दनी क़ाक़िलों में ज़ निव्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना क़िके मदीना के ज़रीअे म-दनी ईन्आमात का रिस्वाला पुर कर के हर म-दनी माह के ईजतिमाई हस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहाँ के जिम्मेदार को जम्ह करवाने का मा'मुल बना लीजिये, اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ  
 ईस की ज़-क़त से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की छिफ़ाजत के लिये कुठने का ज़ेहून बनेगा.

हर ईस्लामी भाई अपना येह ज़ेहून बनाअे के "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की ईस्वाह की कोशिश करनी है. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ" अपनी ईस्वाह की कोशिश के लिये "म-दनी ईन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की ईस्वाह की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाक़िलों" में सफ़र करना है. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ



### म-द-त-अतुल मदीना की शायें

सुरत : वलियाभाई मस्जिद, ज्वाज़र दाना दरगाह के पास.

ज़ामनगर : पांच हाटडी

भोडासा : सुका बज़र

गांधीधाम : सपना नगर, मदीना मस्जिद के पास

धोलका : ताज़दारे मदीना मस्जिद के सामने, टावर बाज़र

**म-द-त-अतुल मदीना**

द्वा'वते ईस्लामी



हैज़ाले मदीना, श्री डोलिया जग़ीये के सामने, मिरज़ापूर, सहमदखाबा, गुज़रात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net